मत्स्य पालकों की आय दोगुना करने हेतु सुझाव

कतला

सिल्वर कार्प

रोहू

ग्रास कार्प

मृगल

कॉमन कार्प

मत्स्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश

मत्स्य भवन, 7–फैजाबाद रोड, बाबूगंज, लखनऊ–226016
दूरभाष संख्या–0522–2740483, 2740067, 2740414
2742762, 2740480,
फैक्स : 0522–2740483, 2740414
ई–मेल : fisheries.mpr@gmail.com,
blue.revo.fisheries@gmail.com, up.fish@nic.in
वेबसाइट : www.http//fisheries.upsdc.gov.in

मत्स्य पालकों की आय दोगुना करने हेतु सुझाव

- हैचरी में पूर्ण क्षमता के आधार पर ब्रूडरो का चक्र वार प्रजनन कराना चाहिये ताकि एक चक्र के जल का पूर्ण उपयोग हो सके।
- जल स्तर ऊँचा है तो रिसाव से पानी तालाब की सतह के ऊपर आता है जिससे पानी में उपलब्ध पोषक तत्व तनु हो जाते हैं।
- तालाब का जल बहाव (Overflow) से निकलता है तब तालाब के जल में पोषक तत्व बाहर निकल जाते हैं। अत: जल स्तर नियंत्रित रखा जाए।

हाईड्रोजन सल्फाईड गैस (H_2S) पर नियत्रंण –

यह अवायवीय दशा में बनती हैं एवं इसकी मात्रा तालाब में बढ़ने से मछली की औसत वृद्धि दर घटने, उत्तरजीवित्ता दर कम एवं मत्स्य आहार रूपान्तरण दर (F C R) बढ़ने से उत्पादन लागत बढ़ने का कारण है।

गहरे तालाब--

गहरे तालाब में कम घुलित ऑक्सीजन अवायवीय परिस्थिति उत्पन्न करती है तथा तैरते हुए कार्बनिक तत्व जब सतह में बैठते है तब हाईड्रोजन सल्फाईड गैस उत्पन्न होती है इसके अतिरिक्त अधिक मात्रा में पूरक आहार देने से, अप्रयुक्त पूरक आहार से प्लवक टूट जाते है

रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में सावधानी–

मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों के आधार पर ही रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिये ताकि रासायनिक उर्वरकों के क्रय पर अनावश्यक व्यय न हो एवं उर्वरक का दुरूपयोग न हो।

तालाब में अम्लीयता बढ़ना–

तालाब में अम्लीयता बढ़ने पर पी–एच कम होता है तथा इसमें पानी में घुली फास्फोरस अघुलनशील अवस्था में तेजी से रूपान्तरित होती है। तालाब में फास्फोरस उपलब्ध रहते हुए भी निष्क्रिय रहता है। इससे मछली की वृद्धि प्रभावित होती है। अम्लीयता बढने पर मछली के भोजन की उपाचय दर कम हो जाती है। इससे मछली को भूख कम लगती है। परिणाम स्वरूप तालाब में भोजन होते हुए भी उसका उपयोग नहीं हो पाता है।

ऑक्सीजन की मात्रा–

जिस तालाब में अत्याधिक मछलियाँ हैं वहाँ ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा आवाश्यक है।

जल प्रवाह की उपलब्धता –

जल प्रवाह की उपलब्धता के अनुसार आगणन कर तालाब निर्माण कराना चाहिए ताकि जल अभाव में तालाब निर्माण की लागत से हानि न हो।

तालाब निर्माण से पूर्व मिट्टी की श्रेणी, जल सीपेज, जल प्रवाह दर–

तालाब निर्माण से पूर्व मिट्टी की श्रेणी उसमें जल सीपेज, जल प्रवाह दर एवं कितने जल की प्रतिपूर्ति आवश्यक है, ज्ञात होना चाहिए। इसी आधार पर तालाब के निर्माण हेतु क्षेत्रफल ज्ञात कर मात्र उतने ही क्षेत्रफल का तालाब निर्माण कराना श्रेयस्कर है तथा जल पूर्ति के अभाव में तालाब निर्माण लागत की हानि रोकी जा सकती है।

नर्सरी में मत्स्य हानि रोकना–

1.नर्सरी एवं संचय से पूर्व अस्थायी रूप से रखे गये स्थल के पानी की भौतिक–रासायनिक

अवस्थाओं में अन्तर।

2. स्पॉन हेतु वाँछित भोजन उचित मात्रा में न होना।
3. परभक्षी मछलियों की फ्राई का नर्सरी में उपस्थित होना।
4. जलीय कीड़े एवं उनके लार्वा नर्सरी के जल में उपस्थित होना।
5. विभिन्न आकार का स्पॉन एक ही नर्सरी में संचित करना।
6. नर्सरी में जब जल की मात्रा कम हो व पानी का तापमान बढ़ता–घटता है, जिसका सीधा प्रभाव जल में घुली ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।
7. फाइटोप्लैन्क्टन (Phytoplankton) का साईज से अधिक बड़ा होने से स्पॉन उसे भोजन के रूप में ग्रहण नहीं कर सकता है। फाइटोप्लैन्क्टन की अधिक मात्रा रात्रि में ऑक्सीजन की कमी होने का कारण बनती है।
8. मानक से अधिक संख्या में स्पॉन नर्सरी में संचित होना।

अंगुलिका संचय–

- 1 हेक्टेयर के जल क्षेत्र में 70 –100 मि0 मी0 तक की लम्बाई की 10,000 स्वस्थ अंगुलिकाएं संचित की जा सकती हैं। संचय का अनुपात उनके आकार पर निर्भर रहता है। 6 प्रकार की देशी व अभ्यागत मछलियों को निम्न अनुपात में संचय कर सकते हैं।
- कतला 10 प्रतिशत, रोहू 10 प्रतिशत, नैन 10 प्रतिशत, सिल्वर कार्प 25 प्रतिशत, ग्रास कार्प 20 प्रतिशत, कामन कार्प 25 प्रतिशत

- कतला 30 प्रतिशत, रोहू 25 प्रतिशत, नैन 20 प्रतिशत, कामन कार्प 25 प्रतिशत।
- कतला 40 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत, नैन 30 प्रतिशत।
- संचय करते समय 10 प्रतिशत की हानि की संभावना मानते हुए अधिक संचय करना चाहिए। सिल्वर कार्प के बीज का संचय कतला प्रजाति के बीज के संचय के एक माह बाद करना चाहिए क्योंकि सिल्वर कार्प की भोजन ग्रहण करने की प्रवृत्ति कतला से तेज होती है और प्रतिस्पर्धा में कतला द्वारा भोजन कम ग्रहण किया जाता है।

कृत्रिम आहार देने में सावधानियाँ–

तालाब में कृत्रिम आहार देते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये।

1. कृत्रिम आहार निश्चित समय व स्थान पर सुबह देना चाहिए।
2. जब मछलियां पहले दिये गये आहार को ग्रहण कर लें तभी पुन: आहार देना चाहिए।
3. घास/ वनस्पतियों आदि के रूप में आहार बांस की ट्रे में देना चाहिए।
4. यदि पानी की सतह पर काई आ जाये तो कुछ समय के लिए कृत्रिम आहार देना बन्द कर देना चाहिए। इसके अतिरिक्त तालाब की तली की सफाई के साथ ही समय–समय पर तालाब से जलीय कीट व जीव निकालते रहना चाहिए एवं जल का परीक्षण कर उसका पीएच स्थिर रखना चाहिए।

अन्य सुझाव–

1. तालाब के पानी में जाने पर खुजली होना– तालाब में एक लीटर प्रति एकड़ की दर से फर्मलीन का प्रयोग। क्योंकि यह मछली पर परजीवी का प्रमाण हैं।
2. मछली 400 ग्राम वजन तक भार प्राप्त कर लेती है तब एक टन मत्स्य आहार के साथ **Ivermetacin** की मात्रा 100 ग्राम, पूरक आहार के साथ मिश्रण कर देने से मछली की वृद्धि दर प्रभावित नहीं होती है।
3. मछली के पेट को साफ रखने के लिए 3 माह में एक बार एक लिटर अण्डी का तेल 1000 किग्रा0 पूरक आहार में मिश्रण कर प्रयुक्त करने से मछली द्वारा आहार ग्रहण न करने की समस्या से निदान मिलता है।
4. मछली की मृत्यु का यदि कारण ज्ञात न हो रहा हो तो 30 प्रतिशत एल्कोहल 1 लीटर प्रति एकड़ की दर से तालाब में प्रयोग करना लाभदायक है।
5. खाने का सोडा 1.5 किग्रा0 प्रति 1000 किग्रा0 पूरक आहार के साथ माह में एक बार प्रयोग करने से मछली की पाचन शक्ति एवं पेट का पी–एच सही रहता है।
6. नाईट्रोजन ऊर्वरकों के प्रयोग से हरी काई (एल्गल ब्लूम) की अधिकता में पानी का रंग हरा हो जाता है। सूक्ष्म एल्गी मछलियों के श्वसनांगों को अवरुद्ध कर देती है जो उसकी मृत्यु का कारण बनती है। ऐसी स्थिति में नाईट्रोजन ऊर्वरकों का प्रयोग बन्द कर 1 से 3 कि0ग्रा0 प्रति हे0 प्रति मी0 की दर से गोबर के घोल के प्रयोग से तीन सप्ताह में इसका प्रभाव लगभग समाप्त हो जाता है।